भजन

खेल अब खत्म हुआ समझो,अपने निजघर हमें जाना है
उठा कर मूलमिलावे में पिया ने गले लगाना है
1–पिया.जी फिर पूछेंगे हंस के,बोलो अब जाना श्यामा कहां
श्यामा जी पिया जी से कहतीं,वहां चलो कहें रूहें जहां
पाट के घाट जायेंगे हम,रूहों ने शोर मचाना है
श्यामा जी और हम रूहों ने पिया संग झीलन जाना है
2– रंग मोहोल से बाहर आए,देखा सुखपाल खड़े हैं वहां
सजदा वोह पिया जी को बजाते,कैसे ये सतसुख करूं ब्यान
लेकर उड़ चले पिया सबको,लीला में अजब नजारा है
अपने पिया के संग मस्ती, अठखेलियां करते जाना है
3–जमुना जी की पाल पे उतरे,इश्क की मस्ती में घूमें वहां
हिंड़ोलों में झूला झूलेंनाचे गायें संग पिया
पसु पक्षी भी अदाओं से,अपने पिया को रिझाते हैं
हक की एक नजर पाने को,सबके दिल यूं मचलते हैं
4–दिन घड़ी दो पिछला रहया,जब झीलने की बातें करें हमसब
श्री राजस्यामाजी सैंया सबन,पहने वस्तर जो हैं झीलन
सैयों ने पकड़ श्री जी को,जमुना में झूला झुलाना है
करके खेल कई विध विध के,सुख झीलन का पाना है
5–सुख झीलन के पाए बहुत,फिर देहुरियों में सब जायेंगी
मन मोहना सिनगार करके,अपने पिया को रिझायेंगी
देखें नैनों से पिया रूह को,तो खुद को भूल जायेंगी
सुख जो अखंड दिए हैं पिऊ ने,उसी मस्ती में खो जायेंगी